M. 23. 3) ponere, imponere. Mah. 1.1973. 4) remittere, condonare. N. 26.23.: प्राणान् अवसृजामि ते। 5) solvere, liberare. Rigv. 24.13.: अवै ’नं राजा वरुणः ससृज्याद् बद्धम् (Potent. praet. mltf. 7. nisi pertinet ad cl. 3. sicut praes. उपससृज्महे।)

c. अव praef. वि 1) jacere, conjicere, jaculari. Mah. 3. 14253.: तस्य शैलशिखरङ् केशी क्रुद्धो व्यवासृजत्। 2) deponere. Mah. 3.10438.

c. अव praef. सम् jacere, conjicere, jaculari. Mah. 3. 1586.: शरवर्षङ् किराते समवासृजत्; 1.6749.

c. आ affundere, infundere. Rigv. 9.2.28.9.

c. आ praef. सम् 1) ponere, imponere. Mah. 1.1703. 2) tradere. Man. 9.323.: पुत्रे राज्यं समासृज्य।

c. उत् dimittere, emittere, effundere. N. 1.22.: हंसम् उत्ससर्ज; Bh. 9.19.: वर्षन् निगृह्णाम्य् उत्सृजामिच; N. 23.27.: वाष्पम् उत्सृष्टवान् अहम्। — शरान्। Bhatt. 14.14. *trop.* R. Schl. I. 64.3.: क्रोधम् उत्सृजते क्रूरम् मयि। 2) exuere. N. 9.5.: उत्सृज्य सर्वगात्रेभ्यो भूषणानि। 3) projicere. Br. 9.19.: उत्सृष्टम् आमिषम् भूमौ। 4) relinquere, deserere. N. 10.28.: सुप्ताम् उत्सृज्य ताम् भार्याम्। Renuntiare *alicui.* Br. 1.: ताम् अहम् बालाङ् कथम् उत्स्रष्टुम् उत्सहे । आत्मानम् अपिचो ’त्सृज्य तप्स्यामि परलोकगः; Man. 8.170.

c. उत् praef. सम् *id.* R. Schl. II. 44.21. Mah. 3. 8578. 8750. 1.4162.

c. उप 1) emittere, effundere. *trop.* Rigv. 81.8.: उप कामान् (v. gr. min. ed. 2. §.145. annot.) ससृज्महे «*ad te* applicamus desideria *nostra*». 2) aggredi, invadere, incursare. Mah. 3.8461.: श्वापदैर् उपसृष्टानि दुर्गाणि; Man. 4.61. — आदित्य उपसृष्टः sol deficiens, i. e. quem Râhus invasit, voravit (v. राहु). Man. 4.37.

c. नि dimittere. Mah. 1.7543.; manu mittere. Man. 8. 414.

c. नि praef. सम् tradere. Mah. 1.7134.

c. वि 1) dimittere, emittere. In. 5.1.30. emittere, *de sagittis.* Dr. 5.17. Effundere, शोनितम् sanguinem. A. 7.27. Deponere, abjicere, e. c. देहम् corpus, i. e. mori. Ghat. 18. (*cf.* Sa. 2.23.). Tradere. Ragh. 8.70. Dare. R. Schl. II. 36.8. Creare, *ex se emittere.* Bh. 9.7. — *Caus.* dimittere. Su. 3.32. N. 13.3. Deponere, relinquere. N. 13.60. Emittere, *de sagittis.* A. 10.53.

c. सम् conjungere. Rigv. 118.8.: सं वत्सेना ’सृजता मातरम् पुनः «cum vitulo conjunxistis matrem iterum»; 23.23. *Pass.* conjungi, misceri, se conjungere, se immiscere, congredi. Ragh. 5.69.: संसृज्यते सरसिजैर् अरुणांशुभिन्नैः ... विभातवायुः; 13.73.: सौमित्रिणा तद् अनु संससृजे। 2) creare. Man. 1.56.

सृति *f.* (r. सृ s. ति) itio, iter, via. Bh. 8.27.

सृप् 1. *P.* ire, gradi. R. Schl. II. 59.10.: नच सर्पन्ति सत्त्वानि व्याला न प्रसरन्तिच; Hit. 30.3.: सत्रासम् मन्दम् मन्दं सर्पन् (मूषिकः)। (Vid. सर्प et cf. lat. *serpo, repo*, gr. ἕρπω, ῥέπω. Huc etiam traxerim germ. vet. *SLIF* labi (*slîfu, sleif, slifumês*) per metath. e *SILF* = सर्प्, debilitato *a* in *i*, nostrum *schleife*, anglo-sax. *SLIP*, servatâ tenui (v. gr. comp. 89.). Fortasse germ. vet. *SLICH* repere, *slichu, sleih, slichumês*, mutatâ labiali in gutt.; lith. *slenkiu* repo, praet. *slinkau*, fut. *slink-su*; *rĕploju* «ich krieche auf Händen und Füſsen»; hib. *sleagaim* «I sneak, drawl».)

c. अप abire. Mah. 3.14112.: अपासर्पच् कर्णैर् भीतः। Aufugere. R. Schl. II. 29.4.: सर्वे ते तव राघव नृपन् दृष्ट्वा ’पसर्पेयुः।

c. अप praef. वि *id.* Mah. 4.1899.

c. उत् se extendere. N. 23.9.

c. उत् praef. सम् ascendere. Ragh. 6.8.

c. उप adire, aggredi. Br. 3.22.: प्रहसन्न् इव सर्वांस् तान् एकैकम् उपसर्पति। *Etiam* *Atm.* R. Schl. II. 96. 9.: शिलान् ताम् उपसर्पत (omisso augmento).

c. उप praef. सम् *id.* Mah. 1.6450.

c. वि *P. A.* 1) discedere, digredi, dispergi. N. 1.25.: हंसा विससृपुः सर्वतः प्रमदावने; Mah. 1.8286. 2) vagari, volare, fluere. Hit. 10.1.: कपोतराजः सपरिवारो वियति विसर्पन्; Mah. 3.14997.: ऊर्ध्वम् आक्रममाणाः